माँ अंजुमन

ग़ज़ल संग्रह

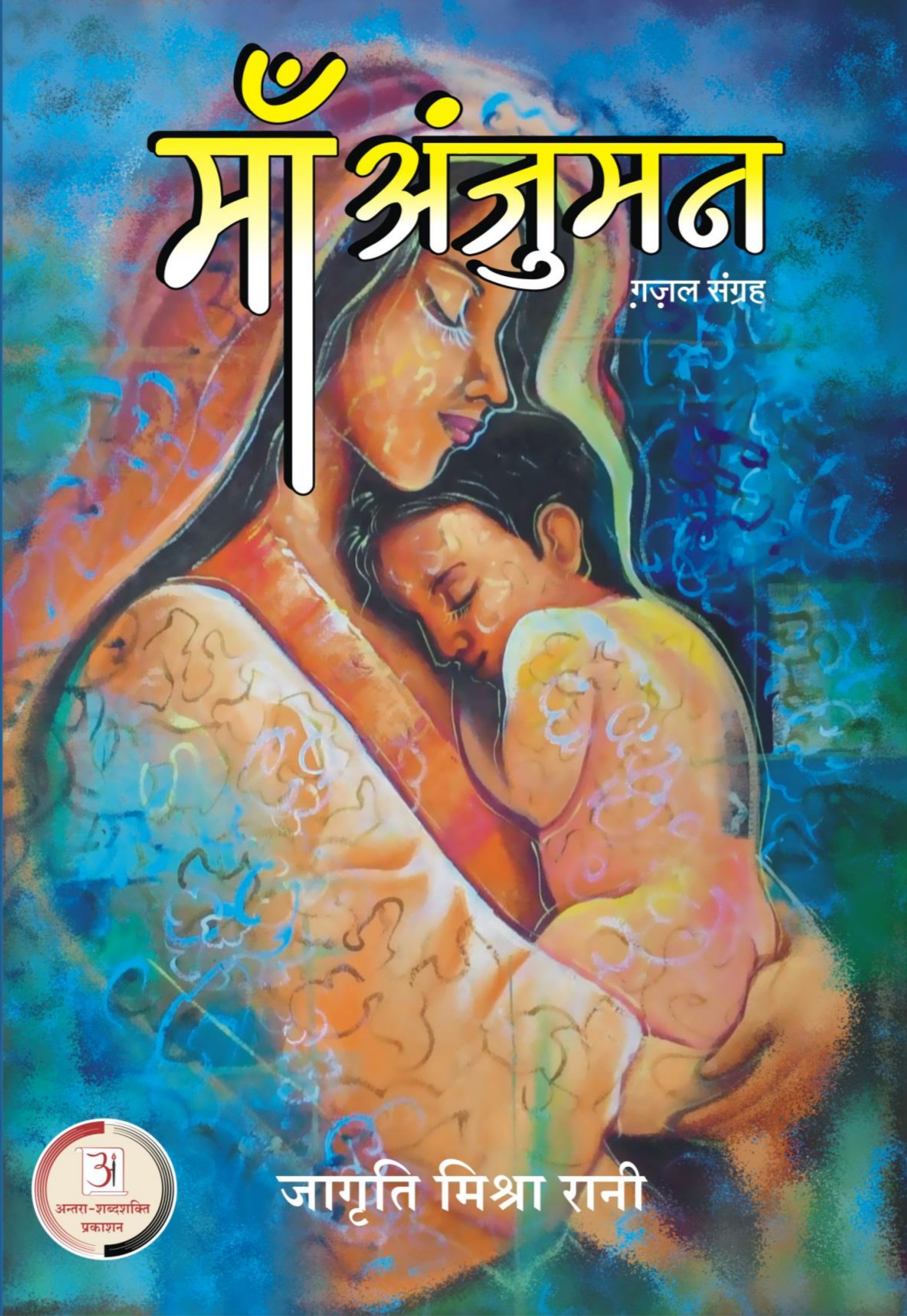

जागृति मिश्रा रानी

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

माँ अंजुमन (ग़ज़ल संग्रह)

माँ अंजुमन

(ग़ज़ल संग्रह)

जागृति मिश्रा 'रानी'

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-259-3

संपादक- डॉ; प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी

मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331

मोबाईल- 9424765259, 9009465259

ईमेल- **antrashabdshakti@gmail.com**

वेबसाईट- **www.antrashabdshakti**

प्रथम संस्करण- 2020, जागृति मिश्रा 'रानी'

मूल्य- 250.00 रूपये

मुद्रक- शैलू कम्प्युटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY JAGRATI MISHRA 'RANI'

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

समर्पण...

माँ

श्रीमती चमेली तिवारी

भूमिका

साहित्य मन को प्रफुल्लित करने वाली होती है। विधा चाहे कोई भी हो, गद्य या पद्य ह्रदय के भाव को व्यक्त करने का सबसे सशक्त माध्यम है। जिसमें सभी भाव का समावेश होता है। कभी दुख को तो कभी मन की प्रसन्नता को प्रकट करती है। विभिन्न बुराइयों को सबके सामने लाती है तो दूर करने का भी यह सशक्त माध्यम एवं उचित हथियार है।

भावों को शब्दों में व्यक्त करने की इच्छा मुझे बचपन से ही थी। यदा-कदा जब भी समय मिलता और भाव मन से निकलकर शब्दों में परिवर्तित होने की चेष्टा करती थी, तो कागज कलम उठा लिया करती थी और भाव लिख दिया करती थी। साहित्य क्षेत्र में सक्रियता की प्रेरणा मेरे पिता जी मां एंव दीदी से मिली।

मेरी भावनाओं को मूर्त रूप देने के लिए अंतरा शब्दशक्ति एवं प्रीति जी का हार्दिक आभार जिन्होने सकरात्मक प्रयास किया है। साहित्य क्षेत्र मे, मेरी पुस्तक माधुरी गजल संग्रह में अपने भावों को असरार के माधयम से कहने का प्रयास किया है मेरी ये पुस्तक मां को समर्पित है।

मधुर सुरताल से जीवन मेरा गुलकंद हो जाए,
सरस और नीर सा मीठा मधुर मकरंद हो जाए।।
अगर तुम लौट के आओ मेरी मैया मेरी माता।
खत्म सारे ही उलझन और अंतर्द्वंद हो जाए।।

जागृति मिश्रा 'रानी'

ग़ज़ल-1

राम धनुष अब लेकर आना,
सब दुष्टों को मार गिराना।

कलयुग में अवतार धरो तुम,
रूप कुपित सबको दिखलाना।

कर के उद्धार अहिल्या का,
यूँ सतियों का मान बढ़ाना।

सद कर्मों से जो हैं भटके,
उनको राह सही तुम लाना।

रामायण का दरश सुझाकर,
भाई का तुम बैर मिटाना।

लोपित हो रहा भाव भक्ति का,
सबको भक्ति का भाव सिखाना।

हाथ बढ़ा कर राघव मेरे,
नैया सबकी पार लगाना।

ग़ज़ल-2

माधव तुमको आना होगा,
मन में भाव जगाना होगा।

इष्ठ भगत का नाता अपना,
ख़ुद को यह समझाना होगा।

कलयुग में भी द्वापर सा इक,
तुमको खेल दिखाना होगा।

अर्जुन सा ही अब हम सब को,
गीता-पाठ पढ़ाना होगा।

ऋषि -मुनियों की इस वसुधा को,
पाप से मुक्त कराना होगा।

'रानी' पर अब नटवर नागर,
नेह सलिल बरसाना होगा।

ग़ज़ल-3

बिना तुम्हारे केशव चमन मे क्या हौगा,
धरा को छोड़ भी दें गगन में क्या होगा।

भरे पडे हैं याँ जयचंद से हज़ारों ही,
इसी तरह जो बढे, जाने वतन मे क्या होगा,

हज़ारों क़समे वादे तो तेरे देख लिये,
सिवाय झूठ के तेरे वचन मे क्या होगा।

चले न जाना कहीं रूठ कर मिरे जानम,
तिरे बग़ैर भला अंजुमन में क्या होगा।

दिलो दिमाग़ तो 'रानी' भटक रहा है कहीं,
मैं जानती हूँ तुम्हारे भजन में क्या होगा।

ग़ज़ल-4

रोग दिल को ये हमने लगाया नहीं,
अपने दिल में किसी को बसाया नहीं।

इसलिए साथ है मेरे अहल-जहाँ,
दिल किसी का तो मैंने दुखाया नहीं।

सच की राहों पे चलती रही हूँ सदा,
इसलिए सर कहीं पर झुकाया नहीं।

जाने कैसा बनाया खुदा ने मुझे,
बेवफा को नजर से गिराया नहीं।

जानती हूं कभी वो नहीं आएंगे,
इसलिए मैंने उनको बुलाया नहीं।

आज भी यह ज़माना मिरे साथ है
साथ तुमने ही मेरा निभाया नहीं,

वो छुड़ा लेंगे दामन पता है हमें,
इसलिए हाथ हमने मिलाया नहीं।

जानती हूँ वो रुसवा करेंगे हमें,
इसलिए राज़े-दिल भी बताया नहीं।

तुझको रुसवा ज़माने में कर दूँ मगर,
मेरी तहजीब ने यह सिखाया नहीं।

कैसा लिख्खा मुक़द्दर यह तूने ख़ुदा
एक दिन भी सुकूँ हमने पाया नहीं,

क्या बताऊँ में 'रानी' तुम्हें हाले-दिल
कौन सा है सितम जो उठाया नहीं,

ग़ज़ल-5

ग़ज़ल आपने गर सुनाई न होती,
तो हर दिल में मस्ती यूँ छाई न होती।

नहीं टूटता दिल मुहब्बत में कोई,
जहां में अगर बेवफाई न होती।

हमें इस क़दर क्रोध आया न होता,
जो तुमने नज़र यूँ हटाई न होती।

समझते अगर प्यार मेरा सनम तुम,
कभी दरमियां ये जुदाई न होती।

बुलंदी में होता वतन आज अपना,
जो अपनों ने अग्नी लगाई न होती।

मुनासिब सजा मिलती गर मुजरिमों को,
तो ऐसी यहां आतताई न होती।

यहां कौन मुझको भला जान पाता,
जनम देने वाली जो माई न होती।

मैं फँसती नहीं घर गृहस्थी में जाकर,
जो उसने नज़र यूँ मिलाई न होती।

ग़ज़ल-6

खिलते हुये चमन को ही वीरान कर दिया,
तुमने तो मेरी मौत का सामान कर दिया।

परदेश तुम गये हो मुझे यूँ जो छोड़कर,
ख़्वाबों को मेरे तोड़ के हैरान कर दिया।

उस शख़्स को भी लोग बुरा कह रहें हैं अब,
जिसने वतन पे ख़ुद को ही कुर्बान कर दिया।

इस बोझ से ही आज दबी जा रही हूँ मैं,
इतना बड़ा जो आपने अहसास कर दिया।

हम फिर नहीं मिलेंगे किसी मोड़ पर कभी,
जारी अजीब तुमने ये फ़रमान कर दिया।

चाँदी के चंद सिक्कों की खातिर ही आपने,
क्यों अपने ही ज़मीर को श्मशान कर दिया।

छुपने लगे है घर में सभी लोग देखिए,
गर्मी ने 'रानी' जिस्म को हलकान कर दिया।

ग़ज़ल-7

दूर तुमसे हमें यूँ भी जाना पड़ा,
हुक़्म माँ बाप का बजाना पड़ा।

प्यार हद से जियादा बुरी बात है,
फासला इसलिए ही बढ़ाना पड़ा।

तुम सदा खुश रहो चाहते हैं यही,
दिल को पत्थर के जैसा बनाना पड़ा।

शक जरा भी नहीं तुम हो अच्छे बहुत,
दूर तुमसे हुए दिल जलाना पड़ा।

याद आते है रह रह के तू हर घड़ी,
तेरी यादों को दिल से लगाना पड़ा।

हम मिलेंगे कभी ये पता भी नहीं,
फिर भी राहों में दिल को बिछाना पड़ा।

क्यों वफाओं पे मेरी शक है तुम्हें,
इस कदर क्यों मुझे आजमाना पड़ा।

बन गई 'रानी' भी अब गुनहगार है,
दोस्त का दिल उसे जो दुखाना पड़ा।

ग़ज़ल-8

प्यार में ख़ुद को ढाल कर देखो,
फिर मिरा दिल उछाल कर देखो।

चैन से जिंदगी गुज़र जाये,
कुछ भरम तुम भी पाल कर देखो।

आज़माने की तुमको ज़िद है अगर,
मुझसे कोई सवाल कर देखो।

भीड़ लोगों की लगते देर नहीं,
तुम ज़रा सा बवाल कर देखो।

होश उड़ जायेंगे तुम्हारे सब,
इक नजर मुझ पर डाल कर देखो।

आज भी तुम ही तुम हो 'रानी' यहाँ,
तुम जरा मेरे दिल को निकालकर देखो।

ग़ज़ल-9

नसीबो के धनी है जिन की दुआ आमीन होती है,
वगरना ज़िंदगी की राह हर संगीन होती है।

ये माना ज़िंदगी की राह में दुश्वारियाँ भी हैं,
रहे गर साथ दिलबर तो बहुत तस्कीन होती है।

क़दम रखना यही तुम सोच कर इस राहे-उल्फ़त में,
जवानी तो जवानी है बहुत शौकीन होती है।

ज़माना लाख दुश्मन हो नहीं शिकवा गिला हमको,
मुकरने से सनम के ज़िंदगी ग़मगीन होती है।

मिला है प्यार जबसे तो समझ आया यही मुझको,
किसी के प्यार से ही ज़िन्दगी रंगीन होती है।

गुनाहों की मुआफ़ी तो उसे मिलती नहीं 'रानी',
जहां भूले से भी मां-बाप की तौहीन होती है।

ग़ज़ल-10

राज़े-दिल अपना तुमने बताया हमें,
है खुशी तुमने दिल में बसाया हमें।

रूठ जाने का करके बहाना सनम,
सच कहें तुमने कितना सताया हमें।

रह गई थी कमी क्या मेरे प्यार में,
हर घड़ी तुमने क्यों आजमाया हमें।

दिल की महफिल से क्यों दूर करने लगे,
क्यों भला इस तरह से जलाया हमें।

इक खुमारी सी छाई है उस दम मिरे,
तूने जब भी गले से लगाया हमें।

दूर आंचल से मां के क्या हम हुए,
मौसमों ने भी फिर तो सताया हमें।

ग़ज़ल-11

क्या किया है तुम्हें पता ही नहीं,
कहते फिर हो हुई खता ही नहीं।

लाख कहते रहो मगर है यक़ी,
तुम ज़माने से हो जुदा ही नहीं।

मान दिल ने लिया तुम्हें रहबर,
अक्से-मंज़िल मगर दिखा ही नहीं।

प्यार के फलसफे बताता है,
प्यार का जो सबक पढ़ा ही नहीं।

कब तलक तुम नकाब पहनोगे,
तुम पे अब तक यक़ी जमा ही नहीं।

रुसवा कैसे हुए यहाँ पर हम,
नाम तुमने कि जब लिया ही नहीं।

ढूढ कर उसको लाऊं कैसे अब,
उसने अपना पता दिया ही नहीं।

बाग सारे उजड़ गये इनमें,
कोई बच्चा तो खेलता ही नहीं।

समझे औरो का दर्द भी वो क्या,
जिसने गम को कभी पिया ही नहीं।

टोक देती हूं मैं ग़लत बात पर,
उसने लेकिन कभी सुना ही नहीं।

याद तुमको भला रखे 'रानी',
ऐसा तुमने तो कुछ किया ही नहीं।

ग़ज़ल-12

लोग सारे धरा को सताने लगे,
स्वार्थ लोलुप हैं कितना बताने लगे।

होड में हम कहां से कहां आ गए,
पेड़ पौधे सभी कुछ जलाने लगे।

चीख भी मां धरा की निकलती नहीं,
इस कदर बेजुबा हम बनाने लगे।

आसमां जल रहा भूमि फटने लगी,
शूल कितने जमी पर चुभाने लगे।

एक पौधा कहीं पर लगाया नहीं,
जो लगे थे उसे भी कटाने लगे।

बढ़ रहीं हैं जो 'रानी' ये आबादियाँ,
पेड़-पौधों को जड़ से मिटाने लगे।

ग़ज़ल-13

अच्छी होती सियासत नहीं,
इसमें बाक़ी शराफत नहीं।

उसकी आवाज ऊंची जो है,
दर्दे दिल है बगावत नहीं।

कैसे ग़म का वो चारा करे,
उसपे मालिक की रहमत नहीं।

बेरुखी उनकी आंखों में है,
है सितम ये नजाकत नहीं।

क्यों चुराते हो नज़रें सनम,
साफ कह दो मुहब्बत नहीं।

मानते हो भले तुम नहीं,
प्यार से बढ़के दौलत नहीं।

वह बिगड़ने लगा इसलिये,
है सही उसकी सोहबत नहीं।

ग़ज़ल-14

हवा इनदिनों की सुहानी बहुत है,
तुम्हारी जो यूँ महरबानी बहुत है।

वो मंजर सभी अब तो धुंधला गये हैं,
कहानी हमारी पु'रानी' बहुत है।

बहा देंगे हर ग़म को हम आँसुओं में,
हमारी जो आंखों में पानी बहुत है।

हसीनों के नखरे अरे तौबा तौबा,
हसीनों में ये आनाकानी बहुत है।

उतर जाएंगे पार हँसते हुए हम,
कहाँ इस नदी में रवानी बहुत है।

कहीं मार डाले न हमको किसी दिन,
ये क़ातिल तुम्हारी जवानी बहुत है।

उसी के इशारों को दिल मानता है,
कि 'रानी' हमारी सयानी बहुत है।

ग़ज़ल-15

भारत का मान जग में बढ़ाते हुए चलो,
इक दूसरे का हाथ बँटाते हुए चलो।

मज़हब की तोड़ देना जो दीवार भी मिले,
फिरका वराना सोच मिटाते हुए चलो।

देखो किसी की आँख में आँसू तो पोछ दो,
हंसते रहो ओ सब को हंसाते हुए चलो।

दुनिया के सामने जो बनाना है इक मिसाल,
अपने वतन की शान बढ़ाते हुए चलो।

जो चाहते हो दोस्तो नस्लों की खैरियत,
पेड़ों को रास्तों में लगाते हुए चलो।

कुछ सरफिरे से लोग जो दुश्मन हैं चैन के,
भटके हुओं को राह दिखाते हुए चलो।

पुरखों के ख़ून से ही है फस्ल-ए-बहार यह,
'रानी' ये पाठ सबको पढ़ाते हुए चलो।

ग़ज़ल-16

दिल में दबी दबी सी जो चाहत बनी रही,
हैं दूर हम भले ही इनायत बनी रही।

जीवन की ढलती शाम से जब सामना हुआ,
सूरत ज़रूर बदली है सीरत बनी रही।

हैं पास अपने ऐश के सामां हज़ार पर,
दिल को मगर तुम्हारी जरूरत बनी रही।

बढ़ने लगे हैं फासले दोनों के दरमियां,
इस सब के बावजूद मुहब्बत बनी रही।

मेवाड की धरा तो है इतिहास मे अमर,
सब कुछ भी खोके देखिए शोहरत बनी रही,

अपनों की खैर ख़्वाही में सब कुछ लुटा दिया,
खुदगर्ज़ियों की फिर भी ये तोहमत बनी रही,

उजडी किसी की मांग कहीं सूनी गोद है,
फिर भी ये रहबरों की सियासत बनी रही।

यह साजिशें बिगाड़ न पायीं मिरा वजूद,
'रानी' खुदा की मुझ पे जो रहमत बनी रही।

ग़ज़ल-17

करनी है तय अपनी हिस्सेदारी क्या,
दिखलाऊँ तुमको मैं अपनी दिलदारी क्या।

खाते हो तुम ठोकर ही ठोकर हरदम,
सीखी न तुमने भी कुछ दुनियादारी क्या।

काटे जाते हो हरदम मेरी बातें,
समझे हो तुम खुद को कोई आरी क्या।

बेचैन रहा करता है मन हरदम ही,
इश्क की कहते हैं इसको बीमारी क्या।

भोलेपन को मेरी समझे कमजोरी,
तुम देखोगे अब मेरी दमदारी क्या।

आगे पीछे मेरे कब से घूम रहे,
चाहत है हो जाए मुझसे यारी क्या।

नाज करो अपनी किस्मत पर ए नादां,
दुनिया में मुझसे है कोई प्यारी क्या।

क्यों जाँच रहा है तू मेरी हिम्मत को,
कठिनाई में भी यह 'रानी' हारी क्या।

ग़ज़ल-18

न चाहे वचन पर निभाना पड़ेगा,
बुलाया है उसने तो जाना पड़ेगा।

सदा मुल्क में अम्न की बात ही हो,
घृणा द्वेष सबको को भूलाना पड़ेगा।

खुदा यह जमाना अजब आ गया है,
मुहब्बत को भी आजमाना पड़ेगा।

न बीमारियों का बढ़े ज़ोर हर सू,
नगर साफ सुथरा बनाना पड़ेगा।

खुदा और ईश्वर दिलों में हैं रहते,
यही राज़ सब को बताना पड़ेगा।

खबर ही नहीं थी कि बिछड़ेंगे हम तुम,
जुदाई का ग़म भी उठाना पड़ेगा।

किसी एक से देश चलता न 'रानी',
सभी को ये मिलकर चलाना पड़ेगा।

ग़ज़ल-19

मस्तियाँ ख़ुशग़वार होली की,
पड़ रही है फुआर होली की।

रंग ही रंग हर तरफ़ देखो,
है यही शान यार होली की।

अंग सारा पुलक उठा मेरा,
जब पड़ी मुझपे धार होली की,

हर किसी में उमंग छाई है,
आ गई है बहार होली की।

भूल जाओ सभी गिले शिकवे,
मिल के रहना पुकार होली की।

माफ कर देना मेरी गुस्ताखी,
है बधाई हजार होली की।

सामने मेरे थे पिया 'रानी',
हो गयी मैं शिकार होली की।

ग़ज़ल-20

झलकता उसपे जो रुपया दिखाई देता है,
हमें वो और भी प्यासा दिखाई देता है।

अजीब उसने जो हालत बनाई है अपनी,
निगाहे -हुस्न का मारा दिखाई देता है।

उसी से मेरे बढ़ाये हैं फ़ासले सबने,
मुझे जो सब में ही अपना दिखाई देता है।

मुझे वो भूल के कहता है ख़ुश हूँ मैं बहुत,
ये साफ उसका बहाना दिखाई देता है।

बदल रहा है वो तेवर भी बादलों की तरह,
ज़रुर मुझपे ही बरसा दिखाई देता है।

इस नए दौर में देखा है जिस तरफ़ मैंने,
हरेक शख़्स ही दौड़ा दिखाई देता है।

छुपाये बैठे हैं बरसों से ज़ख़्म यूँ 'रानी',
ज़माने को ये तमाशा दिखाई देता है।

ग़ज़ल-21

दर्दे दिल तुम, तुम्ही हो दवा,
हो इबादत तुम्हीं, तुम खुदा।

आये तो जिंदगी में बहुत,
तुम जमाने से हो पर जुदा।

मांगा दिल ने खुदा से था जो,
सच कहूँ तुम वही हो दुआ।

जिंदगी से हुआ इश्क़ अब,
जीने की मेरी तुम हो अदा।

कृष्ण ने बख्शी है मुझको जो,
वोही ईनाम तुम वो सज़ा।

राज़ की बात कहती हूं मैं,
तुम सितमगर, तुम्ही हो वफा।

दिल को मेरे हुआ क्या है ये,
'रानी' कर बैठी ये क्या खता।

ग़ज़ल-22

जब से हमने गुर जीने के जाने हैं,
भारत की ताकत को सब पहचाने हैं।

आजादी के खातिर जान लुटा देंगे,
शीश कटा दें हम ऐसे दीवाने हैं।

दिखला दो उनको अपनी पोरुष गाथा,
वीरों की धरती से जो अंजाने हैं।

भय खाते मोटा भाई के आने से,
मुल्क का लोहा लोग सभी अब माने हैं।

पढ़ देखो इतिहास तभी तो जानोगे,
हम वीरों के कितने ही अफ़साने हैं।

बचपन का भोलापन होता प्यारा है,
मनभावन होती 'रानी' मुस्काने हैं।

ग़ज़ल-23

दीप कोई कहीं जला ही नहीं,
होश में कोई क्या रहा ही नहीं।

चैन दिल को मिले भी तो कैसे,
ख़त जो उसका हमें मिला ही नहीं।

संस्कारों का ज्ञान क्या होगा,
माँ की गोदी में जो पला ही नहीं।

दर्द औलाद का उन्हें क्या पता,
जिनके बच्चा कभी हुआ ही नही।

क्यों बहाते हो ख़ून दूजे का,
रंग जब ख़ून का जुदा ही नही।

तेरी ग़ज़लों के हम परिस्तार हैं,
यह अलग बात है कहा ही नहीं।

तेरी दुनिया में रह के ऐ 'रानी',
दुख बता कौन सा सहा ही नहीं।

ग़ज़ल-24

मैं सुंदर सी कोई कहानी लिखूगी,
कि राजा तुम्हें खुद को 'रानी' लिखूंगी।

नई और दिलकश हमेशा लगेगी,
कहानी में ऐसी बयानी लिखूगी।

महक जाये दिल की ये वादी भी जिससे,
हवा उसमें इतनी सुहानी लिखूंगी।

छुपाऊंगी तुमसे न कुछ भी क़सम से,
मुहब्बत को दिल की ज़ुबानी लिखूंगी।

दगा दे सकेगा न कोई किसी को,
रहे सब की आंखों में पानी लिखूँगी।

जो बोयेगी दिल में मुहब्बत के जज़्बे,
ग़ज़ल ऐसी सुंदर मैं 'रानी' लिखूंगी।

ग़ज़ल-25

मुझे अपनी तू सारी ही कमाई क्यों नहीं देता,
इसी कारण दुखी हूं मैं, दिखाई क्यों नहीं देता।

मुझे क्या नौक'रानी' घर की तू अपने समझता है,
गई जो एक तो ला दूजी, बाई क्यों नहीं देता।

भुलाते जा रहे हो सात फेरो पर किये वादे,
तुम्हें हर बार कहती हूं, सुनाई नहीं देता।

कभी तो रोज़ करता था मिरी फ़रमाइशें पूरी,
मुझे लाकर के अब तू, रसमलाई क्यों नहीं देता।

ख़मोशी को मैं तेरी अब ख़ताएं मान लेती हूँ,
ये कुछ इल्जाम है मेरे, सफाई क्यों नहीं देता।

कभी मैं सोचती हूं चेंज कर दूंगी तुम्हें लेकिन,
कोई प्यारा यहाँ 'रानी' दिखाई क्यों नही देता।

ग़ज़ल-26

हम प्यार के शैदाई अदावत नहीं करते,
दिल देके किसी से भी बग़ावत नहीं करते।

दुनिया का चलन देख के हैरान हूँ मैं भी,
क्यों लोग मुहब्बत की हिमायत नहीं करते।

इस वास्ते ही आप के रुतबे में कमी है,
अब आप भी पहले सी हुकूमत नहीं करते।

बोओगे अगर काँटे तो कांटे ही मिलेंगे,
क्यों आप यह बच्चों को हिदायत नहीं करते।

छुप जायेगी यह उम्र की रफ़्तार यक़ीनन,
क्यों आप जवाँ दिल सी शरारत नहीं करते।

टूटे हैं मगर ख़ुद को बिखरने से बचाया,
यह बात अलग है कि शिकायत नहीं करते।

गर वक़्त पड़े 'रानी' तो हम जान भी दे दें,
हम सिर्फ़ दिखावे की मुहब्बत नहीं करते।

ग़ज़ल-27

रब की महिमा से महका ये संसार है,
चैन से जीना सबका ही अधिकार है।

कितने डालोगे परदे यहाँ झूठ पर,
दास्तां सबकी कहता ये अखबार है।

अब परखना ज़रूरी है इंसान को,
इस समय को यही आज दरकार है।

यूं बहाने बनाकर न टाला करो,
क्यों हमारी मुहब्बत से इंकार है।

वो समय वो घड़ी भी अधूरी लगे,
जान तेरा हुआ जब न दीदार है।

किस से माँगे ये 'रानी' भी ग़म की दवा,
एक तू ही तो इसका मददगार है।

ग़ज़ल-28

जिये हैं दोस्तो अब तक इसी बहाने से,
लगेगी ज़िन्दगी अपनी कभी ठिकाने से।

नज़र मिली है जो उनसे तो लड़खड़ाये क़दम,
कि जैसे आये हों हम भी शराबखाने से।

लगा कि जैसे ज़माना ही लुट गया अपना,
ज़रा सी देर में इक उनके दूर जाने से।

तिरी तलाश में भटकी कहाँ कहाँ आखिर,
यक़ीं नहीं है तो खुद पूछ ले जमाने से।

ये बात ख़ूब समझती हैं धड़कनें दिल की,
बहार आती है तेरे ही मुस्कुराने से।

इसी पुकार की उम्मीद पर खड़े हैं यहाँ,
हमें बुला लो सनम तुम किसी बहाने से।

हमें पता है मुहब्बत नहीं तुम्हें हम से,
नहीं मिलेगी तसल्ली यू् कसमें खाने से।

ये बात आज बताऊं किसी को क्यों 'रानी',
ख़ुशी है घर में ये उनके ही लौट आने से।

ग़ज़ल-29

वो गलियों से मेरी गुज़रने लगे हैं,
ये मौसम ही सारे बदलने लगे हैं।

तिरी मेहरबानी, उदासी के पल भी,
ख़ुशी के पलों में बदलने लगे हैं।

सजा कर ये बालों में गजरा ऐ जानम,
तुम्हारे लिए हम संवरने लगे हैं।

मुहब्बत का शायद ये है सब करिश्मा,
हमें अपना वो भी समझने लगे हैं।

हुईं जब से आँखों ही आँखों में बातें,
कि तूफान दिल में उमड़ने लगे हैं।

असर कैसा 'रानी' ये हम पर चढ़ा है,
तुम्हारे ही रंगों में ढलने लगे हैं।

ग़ज़ल-30

लॉघ दे जो समंदर ऐसी परवाज़ है,
हिंद की सेना ऐसी ही जांबाज़ है।

आर या पार की हम लड़ाई करें,
धीर औ वीर के यह अल्फाज़ है।

अब मिलेगा हंसी हमको अंजाम भी,
इतना बेहतर हुआ जो आगाज़ है।

लौट आया वो दुश्मन की भी माँद से,
अपने वीरों पे हमको बड़ा नाज़ है।

आंच आने न देना मेरे देश पर,
उन शहीदों के दिल की ये आवाज़ है।

बांध के यह हमेशा कफन चलते हैं,
अजब इन वीरों के भी अंदाज है।

ज़िंदगी नाम की जब वतन के लिए,
बज उठा 'रानी' दिल का मिरे साज़ है।

ग़ज़ल-31

दर्द बढ़ता गया बताने से,
प्यार रुसवा हुआ जताने से।

यह मुहब्बत है या शरारत है,
बाज़ आते नहीं जलाने से।

कैसे उनसे ये जाके पूछें अब,
क्या मिलेगा हमें सताने से।

चार दिन की है जिंदगी सोचें,
नफ़रते छोड़िये बढ़ाने से।

संगदिल हैं नहीं सनम मेरे,
मान जाते हैं वो मनाने से।

पंछियों को भी आसरा दे दो,
क्यों उड़ाते हो आशियाने से।

नाम लिखा मेरे दिल पर ऐसे,
की याद आते हैं भुलाने से।

तुम हो जैसी वो ठीक हो 'रानी',
हमको मतलब नहीं ज़माने से।

ग़ज़ल-32

प्यार की रीति यूँ दुनिया को सिखा देते हैं,
नफ़रतों को भी मुहब्बत का सिला देते हैं।

फ़ितरतें ख़ूब समझती हूँ जहाँ वालों की,
आग लगती है तो यह और हवा देते हैं।

जब भी रोती हूँ मुसीबत में तो क़िस्मत देखो,
मेरे साजन भी मुझे और रुला देते हैं।

जब भी होती है कोई बात ज़रूरी वाली,
आप आने बड़ी देर लगा देते हैं।

आगया कैसा ज़माना ये ज़रा सोचो तो,
लोग बेखौफ हो दूजे को दग़ा देते हैं।

चलके कान्हा के ही चरणों में मैं रख दूँ दुखड़ा,
वो तो बिछ्डो को भी अपनों से मिला देते हैं।

बीच महफिल में निगाहें न मिलाऊँ डर से,
लोग इस बात का अफसाना बना देते हैं।

हमसे नाराज़ भला होगी क्या दुनिया 'रानी',
हम जफाओं के भी बदले में वफ़ा देते है।

ग़ज़ल-33

नानी की याद उसको दिलाने की बात हो,
अब पाक को यूँ धूल चटाने की बात हो।

समझा चुके हैं उसको बहुत बार प्यार से,
हथियार अब तो उसपे उठाने की बात हो।

ताक़त है अपने शेर जवानों में किस कदर,
यह खोफ उसको आज दिखाने की बात हो।

इंसानियत की जिसने उधेड़ी हों धज्जियाँ,
उस मुल्क को ही आज उड़ाने की बात हो।

यह अपनी हरकतों से आता नहीं है बाज,
इस बेहया को अब तो रुलाने की बात हो।

बरबाद जिसने कर दिया जन्नत सी भूमि को,
नाम-ओ-निशान उसका मिटाने की बात है।

आतंकवाद का है सफाया ही लाज़िमी,
अब देश में सुकून को लाने की बात हो।

ग़द्दार को दो ऐसी सजा जो मिसाल हो,
ऐ 'रानी' इनको ज़िन्दा जलाने की बात हो।

ग़ज़ल-34

वो ग़ज़ल प्यार की जो गाते हैं,
दिल के तारों को छेड़ जाते हैं।

प्यार उनका नसीब हो जाये,
हम ख़ुदा को भी यूँ मनाते हैं।

आओ अब तो हमारी राहों मे,
जाने कबसे तुम्हें बुलाते हैं।

ग़मज़दा वो कहीं न हो जायें,
इसलिये अपने ग़म छुपाते हैं।

रास आने लगी है तन्हाई,
हम अकेले में मुस्कुराते हैं।

जानते हैं नहीं रह-ए- उल्फत जो,
वो वफ़ा मेरी आज़माते हैं।

कैसे उनसे निबाह कर पाऊं,
अब सितम उनके बढ़ते जाते हैं।

जाने क्या हो गई ख़ता हमसे,
बातो बातों में वो रुलाते हैं।

प्यार एहसास है नहीं सौदा,
आप नोटों को क्यों उड़ाते हैं।

ग़ज़ल-35

गुलिस्ता इस कदर अपना यहाँ बिखरा नहीं होता,
वफ़ा का आदमी ने साथ गर छोड़ा नहीं होता!

मचलता दिल नहीं अपना अगर उसके तसव्वुर में,
हमारा नाम उसने खून से लिखा ना होता।

.तुम्हारे इक इशारे पर लुटाते ज़िन्दगी अपनी,
हमें तुमसे मिला हर बार जो धोखा नहीं होता।

उजाड़ा फिर चमन को देखिये तक़दीर ने कैसा,
हमारा ख़्वाब तो सोचा कभी पूरा नहीं होता।

ज़रा सी कोशिशों से ही सजा लेते नशेमन को,
हवाओं का जो तेवर इस कदर बदला नहीं होता।

अगर इंकार कर देते, ज़रा सी ठेस ही लगती,
भरोसे से ये दिल यूँ टूटकर बिखरा नहीं होता।

मिरे कान्हा की जो मुझपर नज़र सीधी नहीं होती,
ये 'रानी' रंग चेहरे का तो फिर निखरा नहीं होता।

ग़ज़ल-36

सोचती हूं दवा भी मिलेगी कहाँ,
जख्म गहरे बहुत है भरेगी कहाँ।

शाम को जब ये सूरज छुपेगा नहीं,
लौ चराग़ों कि फिर यह खिलेगी कहाँ।

नेक राहों से हम जो झिझकने लगे,
बात कैसे कहो फिर बनेगी कहां।

खून उबला हुआ इस जवानी का है,
शीत में फिर भला यह जमेगी कहां।

खार ही खार बोये अगर जायेंगे,
फिर कली कोई सोचो खिलेगी कहां,

खौफ जाता रहा पाप-औ पुण्य का,
फिर बताओ ये दुनिया रुकेगी कहां।

ग़ज़ल-37

ज़ीस्त में कुछ कमाल कर रखना,
आरज़ू ऐसी पाल कर रखना।

उम्रे-नौ का यही तकाज़ा है,
तुम क़दम देखभाल कर रखना।

लोग तुमसे सवाल पूछें तो,
तुम भी कोई सवाल कर रखना।

ज़िन्दगी भी ख़ुदा की नेमत है,
इसकी भी देखभाल कर रखना।

मैंने दिल दे दिया तुम्हें देखो,
इसको तुम अब संभाल कर रखना।

याद रक्खें तुम्हें जहाँ वाले,
कोई ऐसा कमाल कर रखना।

कब ज़रूरत वतन को पड़ जाये,
ख़ून अपना उबाल कर रखना।

चाहती हो जो शुहरतें 'रानी',
अच्छे नग़मे उछाल कर रखना।

ग़ज़ल-38

अपनी कोशिश हमें आज़मानी तो है,
बाद इसके कहीं शादमानी तो है।

राहे -उल्फ़त है काँटों भरी ग़म नहीं,
प्यार की राह इतनी सुहानी तो है।

लाख मौसम ख़िजाओं का छाया रहे,
ज़िन्दगी की नदी में रवानी तो है।

दिल के ज़ख़्मो का दर्मां किया यूँ नहीं,
कुछ मुहब्बत की बाक़ी निशानी तो है।

है अहिंसा से रिश्ता पुराना मगर,
देश रक्षा में जाँ अब लुटानी तो है।

माना ज़ख़्मों से छलनी है सीना मिरा,
देश की लाज फिर भी बचानी तो है।

दे गया प्यार में जो दगा दोस्तो,
बेवफ़ाई उसी की भुलानी तो है।

मिट गये हीर राँझा सनम प्यार में,
उनकी दुनिया में ज़िन्दा कहानी तो है।

हो गए हम भी शामिल नये दौर में,
शानो-शौकत भी 'रानी' दिखानी तो है।

ग़ज़ल-39

रोज़ाना कुछ नये से तजुर्बात हो गये,
लोगों के आज कैसे ख़यालात हो गए।

ईमान चंद पैसों में बिकने लगा यहाँ,
पल पल बदलते आज बयानात हो गए।

निकला है मेरे ख़ून में कुछ दोस्तो का हाथ,
मुँह.देखते के आज के ज़ज़्बात हो गए।

कलियों को तोड़ देते हैं खिलने से कब्ल ही,
इस दौर के अजीब ही हालात हो गए।

मजबूर होके दफ़्न ही कर दी हरिक ख़ुशी,
इस शहरे-दिल में इतने फसादात हो गये।

'रानी' ने चीर डाला हरिक आरज़ू का दिल,
दुश्वार इस कदर ही जो लम्हात हो गये।

ग़ज़ल-40

जिंदगी है या कि रिश्तो का कोई बाजार है,
भावनाओं का बढ़ा हर घर में अब व्यापार है।

किससे अब फरियाद या कोई शिकायत हम करें,
गर्दनों पर हर तरफ लटकी हुई तलवार है।

यह ज़रूरी तो नहीं हर बात मैं लब से कहूँ,
समझो इन खामोशियों को इनमें मेरा प्यार है।

दिल पे ले लेना न मेरी जान मेरी बात को,
प्यार से भीगी हुई यह आपसी तकरार है।

जानती हूँ प्यार तेरा है नहीं तकदीर में,
फिर भी तेरी चाहतों को दिल में लालाज़ार है।

कैसा आलम हो गया है चार सू मेरे ख़ुदा,
अब गुनाहों से सनी हर शख़्स की दस्तार है।

ग़म न कर तूफान का 'रानी' मिरे होते हुए,
जब तलक हाथों में मेरे कश्ती-ऐ-पतवार है।

ग़ज़ल-41

परदेश जाके जब से वो आबाद हो गये,
सावन के दिन भी देखिये बर्बाद हो गए।

जिनको मिरे गुरू ने ग़ज़ल का दिया हुनर,
वो देखते ही देखते उस्ताद हो गए।

माँ बाप को रुलाया सताया है उम्र भर,
वैसे ही उनके अपने भी औलाद हो गए।

जो टोटके थे ज़ीस्त में कल काम के बहुत,
इस दौर में वो सारे बे बुनियाद हो गए।

ख़ामोशियों के साये में रोते थे जो कभी,
आई बहार सारे ही दिलशाद हो गए हैं।

ग़म की घटायें अब हमें डसती नहीं सनम
लगता है जैसे हम भी तो फौलाद हो गए।

अब शहरे-दिल में घूमना फिरना भी है मुहाल,
हर इक गली में पैदा जो जल्लाद हो गए।

परवाह उनको एक भी वादे की अब नहीं,
'रानी' फिज़ूल प्यार के संवाद हो गए।

ग़ज़ल-42

भूले बिसरे शुमार कर लेना,
याद हमको भी यार कर लेना।

साथ रहना अगर नहीं मुमकिन,
कुछ पलों को ही प्यार कर लेना।

जिस घड़ी हो मिलन हमारा यह,
दिल को उस दम बहार कर लेना।

कश्ती-ऐ-दिल पे बैठ कर तुम भी,
ग़म के सागर को पार कर लेना।

तोड़ दीवार दूँगी मैं हर इक,
थोड़ा सा इंतज़ार कर लेना।

वार दूँगी मैं जान भी तुम पर,
'रानी' का ऐतबार कर लेना।

ग़ज़ल-43

खुशी के लिये हम तरसने लगे,
उदासी के बादल बरसने लगे।

जरा दाना-पानी मिला प्यार से,
तो चिड़िया के बच्चे चहकने लगे।

वो सावन के बादल सा आएंगे अब,
इसी आस में हम संवरने लगे।

नशेमन को ऐसी हवा लग गई,
कि तिनको के जैसे बिखरने लगे।

मुरादें कहाँ सब की पूरी हुईं,
हमीं आरज़ू में भटकने लगे

कहो प्यार बगिया में कैसे फलेगा,
जो नफरत दिलों में दहकने लगे।

मिरे रब तेरे बिन सहारा न कोई,
तुझे 'रानी' अब हम सुमरने लगे।

ग़ज़ल-44

जिंदगी यूं ही गुजर जाए न सोते-सोते,
उम्र जो बीत रही मुक़द्दर को ही रोते रोते।

ग़ौर फरमाएं ज़रा अपने गुनाहों पे कभी,
ज़ीस्त बन जाये जहन्नुम न ये ढोते ढोते।

आज नफ़रत के शजर फूलते फलते देखो,
जाने किस रोज़ थकोगे इन्हें बोते-बोते।

ख़्वाब तो देखे मुहब्बत से भरे भी हमने,
देखी पूरी न ये ताबीर भी होते होते।

जाने किस दौर में पनपेगी मुहब्बत अपनी,
टूटते जाते हैं हम सब्र को खोते खोते।

तेरे दीदार की हसरत ही लिये जाते हैं,
देर कर दी है बहुत तुम को ही रोते रोते।

जिंदगी का ये सफ़र तन्हा कटेगा कैसे,
आप 'रानी' को बता दीजिये जाते जाते।

ग़ज़ल-45

बुढ़ापे में अपना सहारा भी होगा,
है संतान लायक गुजारा भी होगा।

दुखाना नहीं दिल पिता और मां का,
खुदा का यही बस इशारा भी होगा।

सदा अपने बच्चो को शिक्षा सही दो,
अशिक्षित रहा तो नकारा भी होगा।

समय है अभी भी सुधर जाओ साहिल,
जन्म ये पता क्या दुबारा भी होगा।

ये जीवन हमारा है सागर सा गहरा,
सरस नीर मीठा क्या खारा भी होगा।

बुलंदी जिसे है हुई आज हासिल,
कभी न कभी यार हारा भी होगा।

हमेशा दिया तुमने यौवन को धोखा,
कभी दिल ने तुमको पुकारा भी होगा।

किसी हार से देखो डरती न 'रानी',
कभी ये जमाना हमारा भी होगा।

ग़ज़ल-46

कहां जा रहे हो वतन से निकलकर,
मिलेगा भला क्या सुकु मिलो चल कर।

दिलों का ये नाता है नाजुक बहुत ही,
कदम इस नगर में यूं रखना संभल कर।

रखो तुम जमाने से खुद को बचा कर,
कहीं गिर न जाओ कभी तुम फिसल कर।

है दुनिया भरी धोखे बाजो से सुन लो,
है होते बड़े खुश ये अपनों को छल कर।

सभी ख्वाब पूरे तो होते नहीं हैं,
न रखना कभी अपने दिल को मचल कर।

है मुहब्बत अगर तो क्या तकरार करना,
कभी उनके सांचे मे देखो तो ढल कर।

दुआएं मिले ऐसा कुछ काम कर लो,
ये रख देगी सचमुच मे जीवन बदल कर।

ये जीवन भी है इक पहेली सी 'रानी'
बड़ी होशियारी से इस को तू हल कर।

ग़ज़ल-47

मिले उनसे ये मुद्दत हो गई है,
तन्हा रहने की आदत हो गई है।

बढा़ है जोर अब चालों का इतना,
कि रिश्तों में सियासत हो गई है।

छुपाएँ लाख वह हमसे भले ही,
उन्हें हमसे मुहब्बत हो गई है।

हमारी वो गज़ल सुनते नही अब,
बड़ी उनकी हिमाकत हो गयी है।

खफा होने लगे हैं मुझसे सब क्यों,
ये क्यों सबको अदावत हो गई है।

वो ख्वाबों में है ख़्यालों में ये मेरे,
मेरी चाहत इबादत हो गई है।

वो जबसे रूठ के बेगाना हुआ,
मुझे मुझसे ये नफ़रत हो गई है।

ग़ज़ल-48

सभी की प्रेरणा पावन मधुर मकरंद थे प्यारे,
अनोखे ज्ञान के सागर विवेकानंद थे प्यारे।

शिकागो की धरा पर मान हिंदी का बढ़ाया था,
कथानक और कहानी का मधुर सा छंद थे प्यारे।

दुखी लाचार रोगी दीन दुखियों के मसीहा बन,
जलाई प्रेम की ज्योति, अजब प्रबन्ध थे प्यारे।

पुराणों का सुयश वेदों,की वाणी सार गीता का,
सभी कुछ याद था उनको, गजब सानंद थे प्यारे।

सदा नारी में मां मूरत, बहिन बेटी निहारे बस,
हमेशा आत्मा परमात्मा, रस रंध थे प्यारे।

वरद विद्वान जन नायक, प्रबल प्रतिभा विचारक वो,
सुहानी सादगी सुंदर, रसीले कंद थे प्यारे।

सदा मां भारती शोभित, रखो ये कह गए सबसे,
जगे बस जागृति जन जन, वरद आंनद थे प्यारे।

ग़ज़ल-49

हाल दिल का उन्हें हम सुनाते रहे,
वो सितमगर हमें आजमाते रहे।

बात क्या हो गई कुछ कहा भी नहीं,
शूल दिल में हमेशा चुभाते रहे।

है खुदा पर भरोसा हमेशा तभी,
आंधियों में दिए हम जलाते रहे।

आज तक क्यों यकीं उनको आया नहीं,
जब कि हम गीत उनके ही गाते रहे।

बेगुनाही में हमको सजा क्यो मिली,
बिन बताये ही मुंसिफ भी जाते रहे।

टूट कर हम बिखरते रहे उम्र भर,
हौसला पर स्वयं दिलाते रहे।

एक झटके में दामन गये वो छुड़ा,
हम वफा फिर भी 'रानी' निभाते रहे।

ग़ज़ल-50

आप ही आप है जिंदगी मे मेरी,
आप ही आप है बंदगी मे मेरी।

चैन मुझको नहीं है सनम आप बिन,
आप शामिल हो जी हर खुशी मे मेरी।

चाहती हूँ सदा सँग मेरे रहो,
जिंदगी बंदगी आशिकी में मेरी।

आ भी जाओ कभी मेरे पहलू मे तुम,
आ के बस जाओ दीवानगी में मेरी।

आपसे दूरियाँ ही बढ़ातीं हैं दुख,
आपका साथ वर है हँसी में मेरी।

आपको छूते ही प्यास मिट जाती है,
आबे जम जम हो जाँ तिश्नगी में मेरी।

'रानी' तो आपकी है दीवानी सनम,
आपकी गूँज है हर घड़ी में मेरी।

ग़ज़ल-51

अजब औ गजब ये जमाना हुआ,
दांत हाथी के जैसे दिखाना हुआ।

बन गए हैं सभी मंथरा अब यहां,
आग ही आग है अब लगाना हुआ।

कीमत ईमानदारी की यह रह गई,
चलने वाला अब इसमें दीवाना हुआ।

वह घड़ी भर भी अब पास रहते नहीं,
मेरा आना हुआ उनका जाना हुआ।

दर्दे दिल भी किसी से है कहना बुरा,
जख्मों को अपने ही है बढ़ाना हुआ।

वो अभी तक जरा सा भी पिघले नहीं,
व्यर्थ में अश्कों का अब बहाना हूआ।

लौट के उसने देखा नहीं फिर कभी,
है गए उनको अब इक जमाना हुआ।

चैन की नींद 'रानी' तुम्हें आएगी,
मौत का पास तेरे जो आना हुआ।

ग़ज़ल-52

बेटा मेरा प्यारा दुलारा है तू,
मेरी जिंदगी का सहारा है तू।

नाम रोशन करना निज अंदाज से,
आसमां का चमकता सितारा है तू।

डांट लूं चाहे तुमको जितना भी मैं,
पास आए मेरे बड़ा ही न्यारा है तू।

न जाना कहीं दूर मुझसे तू बेटा,
मेरी जीवन का मौसम ए बहारा है तू।

दूर तुमसे एक पल ना रह पाऊंगी मैं,
जान से प्यारा आंखों का तारा है तू।

ओस की बूंद सा तू शीतल कभी,
तो लगे कभी दहकता शरारा है तू।

हूं अगर मै एक ममता की मूरत,
बहने वाली उसमें निर्मल धारा है तू।

ग़ज़ल-53

समंदर लांघ जाएँ जो वही परवाज होते हैं,
मिटें जो देश हित खातिर वहीं जांबाज होते हैं।

चले जो नेक राहों पर बताओ क्यों फिसलते हो,
मिले अंजाम भी प्यारा जो यूं आगाज होते हैं।

छुपा लेते हैं दिल में वो सदा उल्फत की बातों को,
जो जाहिर कर दे जग में हम तो वो नाराज होते हैं।

चलाकर पीठ पर खंजर हमें आघात करते हैं,
बताऊँ क्या जो लोगों के अजब अंदाज होते हैं।

नहीं मुमकिन भुला पाना वही तो साज धड़कन का,
जो सीधे रूह में उतरें वही आवाज होते हैं।

मोहब्बत में जरा देखो गजब के हाल हैं यारो,
न चुप रहते न कह देते अजब से साज होते हैं।

हरा करते लहू से सींचकर मां भारती को जो,
वही तो देश में 'रानी' हमारे नाज होते हैं।

ग़ज़ल-54

हमारी शान है हिंदी,
हमारा मान है हिंदी।

दिलाती है हमे जग में,
बहुत सम्मान है हिंदी।

सनातन धर्म से आई,
यही पहचान है हिंदी।

पिता सी सख्त गर है तो,
मां की मुस्कान है हिंदी।

लगे गीता सी पावन जो,
वही गुणगान है हिंदी।

कराएं भावना का ज्ञान,
गुण की खान है हिंदी।

है घर मेरा ये हिंदुस्तां,
औ मेरी जान है हिंदी।

ग़ज़ल-55

मेरी गलियों में तू आना छोड दे,
आके दिल मेरा जलाना छोड दे।

जानते हैं तेरी सच्चाई सभी,
यूं शराफत तू दिखाना छोड दे।

हम जो रूठे तो न लौटेंगे कभी,
फिर न कहना आशियाना छोड दे।

राज बनकर तुम मिले हो जीस्त मे,
राज से परदा हटाना छोड दे।

वक्त मिल पाया नहीं थोड़ा सा भी,
यूं बहाने अब बनाना छोड दे।

मानते हैं हम खता हमसे हुई,
तुहमतें अब तू लगाना छोड दे।

इसलिए दिल हमने पत्थर कर लिया,
तू हमें अब आजमाना छोड दे।

हो चुके हैं हम किसी अब और के,
तू हमें अपना बताना छोड दे।

है नहीं 'रानी' तेरी तकदीर मे,
नाम लिख लिख कर मिटाना छोड दे।

ग़ज़ल-56

इस फरेबी जहां से उठा अब खुदा,
पास अपने मुझे तू बुला अब खुदा।

नींद आती नहीं है मुझे रात भर,
चैन की नींद मुझको सुला अब खुदा।

जिन निगाहों को चुभने लगी आजकल,
उन निगाहों से मुझको बचा अब खुदा।

मैं तो तन्हा सफर में भटकने लगी,
हाथ अपना ज़रा तू बढ़ा अब खुदा।

प्यार मुझको किसी से मिला ही नहीं,
नेह अपना तू मुझ पर लुटा अब खुदा।

इन अंधेरों में घुटने लगा मेरा दम
रोशनी कुछ मुझे भी दिखा अब खुदा,

प्यार दिल में है आंखों में बरसात है,
खुशनुमा कोई मौसम बना खुदा।

तेरे मकतब मे है मेरा भी दाखिला,
इम्तिहां ले मुझे आज़मा अब खुदा।

मिन्नतें रोज़ करती है 'रानी' यही,
मैं भी तेरी हूँ तू यह जता अब ख़ुदा।

ग़ज़ल-57

पूरे ही आपने मेरे अरमान कर दिया कर दिया,
खुद को ही मुझपे आपने कुरबान कर दिया।

न भूल पायेगा दिल ये आपको सनम,
इतना बडा जो आपने एहसान कर दिया।

मजहब की जाने कैसी है आग ये लगी,
खिलते हुये चमन को वीरान कर दिया।

सीखा गयाहै प्रीत भी एक जानवर हमें,
मालिक के लिये गिरवी अपनी जान कर दिया।

जीना हुआ है मुश्किल यहां हाल देखकर,
दुनिया की रीत ने मुझे हैरान कर दिया।

जाने लगे है छोड के घर बार को अपने,
करजे ने अन्नदाता को परेशान कर दिया।

'रानी'का दिल है टूटा उल्फत मे इस कदर,
अरमां जला के दिल को शमशान कर दिया।

ग़ज़ल-58

हमें हाथ जबसे खज़ाने लगे हैं,
जो रूठे थे वो पास आने लगे हैं।

जिन्होंने गिराये है हिंसा के शोले,
वही भाईचारा सिखाने लगे हैं।

दिलों में भला ये लगी आग कैसी,
कि दुनिया ही सारी जलाने लगे हैं।

खुदा सा दिया था दर्जा जिन्होंने,
वही आज नजरें चुराने लगे हैं।

हुआ क्या अचानक उन्हें देखिये तो,
बहुत प्यार हम पे लुटाने लगे हैं।

यकीं था हमें जिन पे हद से जियादा,
वो पीछे से खंजर चलाने लगे हैं।

कहां तक गिरेंगे खुदा ही बताएं,
वतन को जो अपने मिटाने लगे हैं।

छुपाते रहे दिल की बातें हमेशा,
अचानक हमें वो बताने लगे हैं।

ऐ 'रानी' हुई जिनकी खातिर तू रुसवा,
वही आज दामन बचाने लगे हैं।

ग़ज़ल-59

दिलकश नजारों के मंजर बहुत है,
सवालों के उठते समंदर बहुत हैं।

यूं तो नजर आते हैं महफिलों में,
पै आलम ए तन्हाई अंदर बहुत हैं।

हँस के हैं पी लेते जो गम के प्याले,
ऐसे भी मस्त कलंदर बहुत हैं।

नहीं जीतेगा कोई नापाक हमसे,
यहाँ पर अभी भी सिकंदर बहुत हैं।

परेशानियों से है लगता नहीं डर,
यूँ तो जिंदगी मे बवंडर बहुत हैं।

जाने कब कर दे यहाँ कोई आहत,
जुबानों में लोगो के खंजर बहुत हैं।

कैसे किसी को मिलेगा यहाँ हक,
यहाँ की सियासत में बंदर बहुत हैं।

हुई रिश्तेदारी दिखाबे का आलम,
बढ़े शादियों में आडंबर बहुत है।

ग़ज़ल-60

राहे उल्फत वफा की पु'रानी' तो है,
सदियों से लेकिन ये नू'रानी' तो है।

भले पानी दिख जाए ठहरा हुआ,
हकीकत ये है उसमें रवानी तो है।

रखते हमेशा ही अहिंसा से रिश्ता
,देश खातिर लहू पर बहानी तो है।

माना यह दिल जख्मों से छलनी हुआ,
जिंदगी जो मिली रस्मे निभानी तो है।

दे गया मोहब्बत में दगा जिसने,
बेवफाई उसी की भुलानी तो है।

होते हैं संग खुशियों के गम भी,
कांटों संग फुल लगती सुहानी तो है।

दिल ने चाहा जो हासिल कर ना सके,
अधूरी ही सही पर कहानी तो है।

हो गए हैं शामिल अजीब सी दौड़ में,
शानो-शौकत झूठी फिर दिखानी तो है।

ग़ज़ल-61

चलो दूर जाए यहां से निकल कर,
नया कर दिखाए कुछ साथ चल कर।

लिए हाथ में हाथ को गर चले तो,
जमाने को रख देंगे पूरा बदलकर।

मिलेंगे नहीं मां पिता फिर कभी भी,
कर उनकी सेवा जीवन सफल कर।

मजा जिंदगी का भी आने लगेगा,
जरा उनके सांचे में देखो तो ढल कर।

मुश्किल बहुत दिल से मुहब्बत भुलाना,
कदम इस डगर में यूं रखना संभलकर।

मिले ना तुम्हें गर बड़ी सी इमारत,
सजा के तू अपने घर को महल कर।

अभी से सभी जो मेहनत करेंगे,
मिलेगी सफलता फिर आगे चल कर।

किसी से जरा तुम नहीं कम हो 'रानी',
नहीं तू किसी की कभी भी नकल कर।

ग़ज़ल-62

बात दिल की जो तुमने बताया हमें,
है खुशी तुमने दिल में बसाया हमें।

रूठ जाने का करके बहाना सनम,
सच कहे तुमने कितना सताया हमें।

रह गई थी कमी क्या मेरे प्यार में,
हर घड़ी तुमने क्यों आजमाया हमें।

दिल की महफिल से क्यों दूर करने लगे,
क्यों भला इस तरह से जलाया हमें।

एक खुमारी मेरे दिल में छाने लगी,
तूने जब भी गले से लगाया हमें।

दूर आंचल से मां के क्या हम हुए
प्यार से ना किसी ने मनाया हमें।

ग़ज़ल-63

आ गया कौन सा ज़माना है,
प्रीत के बिन बना फ़साना है।

राहे-उल्फत नई बनाना है,
दिल हमे तुमसे ही लगाना है।

क्या सजायें भला नशेमन,
ज़िन्दगी तो सरायखाना है।

ये वतन त्याग तप की भूमि है,
इस धरा का तिलक लगाना है।

आरज़ू है यही हमारी बस,
शीश मां के लिए कटाना है।

राज़ की बात आज कहते हैं,
ज़िन्दगी तुझ पे ही लुटाना है।

ग़ज़ल-64

करना गद्दार से कुछ मुरव्वत नही,
इनमें होती ज़रा भी शराफत नहीं।

पीठ पर वार करते हमेशा हो तुम,
सामने आने की तुम में हिम्मत नहीं।

कर सके सामना हिंद की फौज का,
पाक सुन तुझमें इतनी है ताकत नहीं।

तेरे वादे का कैसे यक़ी हम करें,
तेरी सूरत से मिलती है सीरत नही।

नेक राहों में रखते हैं हम तो क़दम,
डर के रहने की हमको जरूरत नहीं है।

क्यों नहीं बात इतनी समझता कोई,
भाईचारे से बढ़कर है दौलत नहीं।

सच की राहों में उठती है आवाज़ जो,
तुम समझ लेना उसको बगावत नहीं।

खेल ले मेरे दिल से भी कोई कभी,
'रानी' इसकी किसी को इज़ाज़त नहीं।

ग़ज़ल-65

वफाओं के बदले वफ़ा चाहता है,
ये दिल और तुझसे क्या चाहता है।

बताएं सितम का आलम क्या यारों,
सितमगर ही हमसे वफ़ा चाहता है।

लुटे हैं मुहब्बत में हम तेरी अब तक,
बता और हमसे तू क्या चाहता है।

जहाँ में सभी तो हैं माटी के पुतले,
बनाना मुझे क्यों ख़ुदा चाहता है।

झुका जब.दिया.तेरे क़दमों में सर भी,
तू होना भला क्यों जुदा चाहता है।

बिखर ही गया इस कदर टूट कर अब,
ये दिल प्यार का हौसला चाहता है।

वो इल्जाम देकर भी मुझसे ऐ 'रानी',
न आए लबों पर गिला चाहता है।

ग़ज़ल-66

अपने हर दर्द को अशआर में ढाला मैंने,
बस इसी तरह से खुद को है सम्हाला मैंने।

है कहां कोई मेरा दर्द समझने वाला,
चलन इस दुनिया का है खूब खंगाला मैंने।

घुट रही थी न जाने कब से वो दिल ही दिल में,
उस तमन्ना के गम को खोज निकाला मैंने।

रंग गिरगिट से भी ज्यादा बदलती है दुनिया,
सादगी में छिपा दिल देखा है काला मैंने।

सुकूँ से जिंदगी बीती है जिनके साए में,
उन ही मां-बाप को माना जिगर वाला मैंने।

सोच कर खुश हूँ 'रानी' कुछ तो करम अच्छे हों,
खिलाया इसलिए भूखों को निवाला मैंने।

ग़ज़ल-67

नमक का ऋण वो अदा कर रहा है,
बुजुर्गों कि देखो दवा कर रहा है।

हमेशा मुझे हार मिलने लगी है,
कोई अपना मुझसे दगा कर रहा है।

दुश्मन लाख साजिश भले कर ले लेकिन,
मिरे हक मे कोई दुआ कर रहा है।

सजा दे रहा मुझे आजकल वो,
दिलबर ही दिल से जुदा कर रहा है।

पुण्य है मिरे पिछले जनम का यकीनन,
मिरा फैसला बस खुदा कर रहा है।

वफाई निभाने की खाई थी कसमें,
वहीं आज मुझसे जफा कर रहा है।

जताने लगा मुझ पे एहसान ऐसे,
मुहब्बत जैसे 'रानी' अता कर रहा है।

ग़ज़ल-68

सिलसिला ये अभी भी जारी है,
बेसहारा जहां में नारी है।

क्या तमन्ना रखेंगें महलों से,
झोपडों में उमर गुजारी है।

अब भरोसा करें यहां कैसे,
मतलबी आज दुनिया सारी है।

मत करो तुम गुरुर इतना भी,
वक्त की मार तो करारी है।

आदमियत को भूल बैठे हैं,
आजकल तो यही बीमारी है।

दाना चुगने को आ गई चिड़िया,
क्या पता ताक में शिकारी है।

ग़ज़ल-69

जिंदगी में कहीं करार नहीं,
तेरी आँखों में पाया प्यार नहीं।

थक गई मैं तो इंतजारी में,
क्यों तू सुनता मेरी पुकार नहीं।

सर झुकाने की क्या ज़रूरत है,
मैं तो लेती कभी उधार नहीं।

बात यह अब समझ में आई है,
जिंदगी फूल है ये खार नहीं।

देखकर तेरी बेवफ़ाई भी,
क्यों उतरता है यह ख़ुमार नहीं।

सारी गलियाँ भी बन गईं पक्की,
उड़ते गांव में भी गुबार नही।

मर न जाये कहीं तिरी 'रानी',
फिर न कहना कभी कि प्यार नहीं।

ग़ज़ल-70

दिल में अपने कोई आसरा दे मुझे,
जो सिला में वफा के वफ़ा दे मुझे।

चाहती हूं नहीं चांद तारे मिले,
जो बचा ले चमन वो फिजा दे मुझे।

इस जहां के चलन से है डर मुझे,
सोचती हूं न कोई दगा दे मुझे।

घाव दिल के पुराने भरे ही नहीं,
चोट फिर से न कोई हरा दे मुझे।

मैं वतन से दगा ना करूंगी कभी,
चाहे सूली पे कोई चढ़ा दे मुझे।

मुद्दतों से मुझे नींद आई नहीं,
गोद में अपनी मां तू सुला दे मुझे।

खुद से ज्यादा मुझे है तुम पर यकीन,
बिखर जाऊंगी ना जफा दे मुझे।

सुन रखा है नहीं मिलती दवा इश्क की,
क्या सही ही सुना है बता दे मुझे।

बोझ जिंदगी है अब लगने लगी,
चाहती 'रानी' है अब विदा दे मुझे।

ग़ज़ल-71

दिल पे अब एतबार कर डालो,
जां किसी पे निसार कर डालो।

छोड़ दो अब हमें डराना तुम,
हौसला है तो वार कर डालो।

इश्क की राह में कदम रख के,
दिल मेंअपने बहार कर डालो।

जीस्त चलती नहीं बिना उल्फत,
तुम किसी से भी प्यार कर डालो।

आज पूरे ही कौन करता है,
तुम भी वादे हजार कर डालो।

फिर चलें लौट के लड़कपन में,
खेलो कूदो गुबार कर डालो।

ग़ज़ल-72

आज मौसम सुहाना हवादार है,
यार मेरा मगर आज उस पार है।

दिल हमारा सनम कुछ समझता नहीं,
जाने कब से तुम्हारा तलब गार है।

वीर जांबाज को है हमारा नमन,
यह चमन जिनके दम से ही गुलजार है।

छोटे बच्चों के रुख पर ख़ुशी खिल गई,
आ गया जो खिलौनों का बाजार है।

बेवफ़ा कैसे मानूँ उसे दोस्तो,
मेरा दिल भी उसी का तरफ़दार है।

इस जनम में सनम मिल सकेंगे नहीं,
बीच अपने ज़माने की दीवार है।

डंक मारा है उसने यूँ 'रानी' मुझे,
फूल की ज़द में जैसे छुपा खार है।

ग़ज़ल-73

मिला के नजर तुम चुराते रहे,
लगी आग दिल की बुझाते रहें।

हवाएं चली लौ बुझाने अभी,
जिसे हम हमेशा जलाते रहे।

यकीन क्यों उन्हें हम पर आता नहीं,
वफा जबकि उन से निभाते रहे।

जख्मो को दिखाया नहीं है कभी,
मिली चोटी दिल में दबाते रहे।

समझते हकीकत सभी कि यहां,
भले लाख हमसे छुपाते रहे।

जमाने की दस्तूर देखो जरा,
झुके हैं उन्हें ही झुकाते रहे।

मिलेगा तुम्हें क्या यह सोचो जरा,
सदा आग ही क्यों लगाते रहे।

ग़ज़ल-74

राज़ की बात भी हम तुमको बता देते हैं,
लोग इस बात का अफ़साना बना देते हैं।

आपकी मर्ज़ी है आयें या न आयें लेकिन,
हम सर-ए शाम से महफिल को सजा देते हैं।

उनके आते ही फ़िज़ाओं में महकती है शराब,
वो हवाओं में ही नश्शा सा मिला देते हैं।

छू न पायेंगे कभी रंजो-अलम के झोंके,
हम मुहब्बत का चलो गाँव बसा देते हैं।

उनकी फ़ितरत में जफ़ा है वो जफ़ा ही कर लें,
हम तो बदले में उन्हें फिर भी दुआ देते हैं।

सूखते जाते हैं रह रह के उमीदों के शजर,
आप.जो मेरी वफ़ाओं को भुला देते हैं।

मयकदे जाने की चाहत ही कहाँ हो 'रानी',
जाम आंखों से ही वो हमको पिला देते हैं।

ग़ज़ल-75

जिसे चाहो नज़र से वो ही अक्सर दूर होता है,
मुहब्बत में ज़माने का यही दस्तूर होता है।

बुलंदी चाहता पाना हरिक इंसान है लेकिन,
मुकद्दर साथ दे जिसका वही मशहूर होता है।

सभी के हाथ उठते हैं इबादत को यहाँ लेकिन,
ख़ुदा को किसका जज़्बा देखिये मंजूर होता है।

उलटते ताज शाहों के यहाँ देखें हैं हमने तो,
अभी से किसलिए तू इस कदर मग़रूर होता है।

हज़ारों रोज़ मरते हैं यहाँ पैदा भी होते हैं,
कभी किसकी कमी से यह जहाँ बेनूर होता है।

तुम्हें कैसे दिखाई देगी इस घर की उदासी भी,
तुम्हारे आते ही चारों तरफ़ जो नूर होता है।

अभी से फ़िक्र कर 'रानी' तू उनके बख़्शे जख़्मों की,
इन्हीं ज़ख़्मों से पैदा एक दिन नासूर होता है।

ग़ज़ल-76

कुछ तो कहने की कुछ सुनाने की,
बात करिये तो पास आने की।

यह जले को सदा जलाते हैं,
यह तो फितरत है इस ज़माने की।

लूट लेती है दिल को पल में मिरे,
यह अदा तेरे मुस्कुराने की।

प्यार से बैठिये दो पल तो सही,
छोड़िये बात आने जाने की।

यह समाँ कह रहा है इसकी सुनें,
बात करिये न दिल दुखाने की।

जाइये आप चाहें जायें चहाँ,
फ़िक्र रखिये समय से आने की।

कोई कोशिश तो 'रानी' तुम भी करो,
बात बिगड़ी हुई बनाने की।

ग़ज़ल-77

खुद को क्यों अनजान रखूं,
मैं अपनी पहचान रखूँ।

सारे गम को भुल के मैं,
होठों पर मुस्कान रखूं।

कह दूं दिल की बातों को,
बाकी क्यों अरमान रखूं।

सदकर्मो को अपना कर,
जग में इक अभियान रखूं।

आगे ही बढ़ते जाऊं,
जीवन को गतिमान रखूं।

आशाओ के दीपक से,
हर पल को दिनमान रखूं।

नाचूँ गाऊँ मौज करूँ,
क्यों घर को सुनसान रखूं।

काम करूँ ऐसे जग में,
भारत मां की शान रखूं।

'रानी' अपने मन को मैं,
बच्चों सा नादान रखूं।

ग़ज़ल-78

दरमियाँ जाने क्या फासले हो गये,
इस कदर टूटे की दिलजले हो गए।

सांस थकने लगी रूह डरने लगा,
पस्त सारे अभी हौसले हो गए।

मुश्किलों में कभी साथ रहते थे जो,
अब जुदा सारे ही फैसले हो गए।

चोट पे चोट हमको वो देने लगे,
तो लगा कि यही सिलसिले हो गए।

क्या पता इस तरह हम जुदा क्यों हुये,
अब उनके अलग काफिले हो गए।

अब मिला इन हवाओं मे है जाने क्या,
हर तरफ जैसे अब जलजले हो गए।

ग़ज़ल-79

तुम्हारे प्यार में दिल खुश ग़वार करना है,
ग़मों की झील को हँस हँस के पार करना है।

छुपाये बैठी हूँ कबसे मैं हसरतें अपनी,
चलन ज़माने का अब इख़्तियार करना है।

खुदा ये आज ज़माना भी आ गया कैसा,
सफेद झूठ पे अब ऐतबार करना है।

वो लौट आयें ये उम्मीद भी नहीं अब तो,
ख़याले-यार से दिल में बहार करना है।

क़सम जो खाओ तो खाओ मिरे हुज़ूर यही,
हदों को तोड़ के बस तुमसे प्यार करना है।

बचाना लाज है हमको तो अपने हाथो ही,
ज़ुबाने-तेग़ पे अब तेज़ धार करना है।

समझ चुकी हूँ मैं उस बेवफ़ा की रग रग को,
फ़िज़ूल दिल को ही अब बेक़रार करना है।

सता रहा है ज़माना ये जिस तरह मुझको,
ये फ़ैसला तुम्हें परवरदिगार करना है।

क़सम मैं खा के ये कहती हूँ आज ऐ-'रानी',
चमन के वास्ते जाँ को निसार करना है।

ग़ज़ल-80

वतन के काम हम आए, यही अरमान है यारों,
वतन से शान है सब की, यही पहचान है यारों नहीं।

नही टकरा सके कोई, मेरे भारत की सेना से,
सभी को है पता सेना, मेरी तूफान है यारों।

यही मेरी जमी औ आसमां है वतन मेरा,
वतन कीआन पे हर इक, खुशी कुर्बान है यारों।

वफा की राह में चलना नहीं कोई खेल है यारों,
ये राहें हैं बहुत मुश्किल, कहां आसान है यारों।

मिटा देते हैं आओ देश के जयचंद को सारे,
समझते हैं देश को भी जो सामान है यारों।

चुका ही हम नहीं सकते, कभी मां-बाप के ऋण को,
हमारे जीस्त पर इनके, बहुत अहसान है यारों।

निभाते हैं यहां सब साथ सुख में ही सुनो 'रानी',
कभी दुख आ पड़े तो, साथ बस भगवान है यारों।

ग़ज़ल-81

यह देश मेरा, मुझको प्राणों से भी है प्यारा,
इसके ही अन्न जल पर निर्भर है तन हमारा।

जिस ओर दृष्टि जाये फैली हरीतिमा है,
पावन यहां की माटी निर्मल है जल की धारा।

हैं धर्म और मज़हब सब बाद में हमारे,
जय हिंद दोस्तों है अपना तो एक नारा।

है आरज़ू यही परचम माँ भारती का,
सारे जगत में चमके यह बनके ध्रुव तारा।

बर्फ़ीली चोटियों की सुंदरता क्या कहूँ मैं,
दिल झूम झूम जाये देखे जो यह नजारा।

भाषा या जातियों का क्या भेदवाव 'रानी',
हर जाति धर्म ने ही मिलकर किया गुजारा।

ग़ज़ल-82

दिल की महफिल रोज सजाया करता है,
तन्हाई में शहर बसाया करता है।

हर रोते शख्स को हंसा कर वह इंसा,
अपने जख्मों को भूलाया करता है।

मां के दिल को सुकून मिलता बहुत है,
जब उसका बच्चा मुस्कुराया करता है।

शातिर होते हैं बड़े काले लिबास वाले,
बातों में ही सब को उलझाया करता है।

कौन गरीबों का रहबर है इस दुनिया में,
दो जून की रोटी वह खुद जुटाया करता है।

शोले मजहब के फैलाने वाले इक दिन,
इस तपिश में खूद झुलस जाया करता है।

भाती है शब पूनम की हर शख्स को,
'रानी' जब तारे झिलमिलाया करता है।

ग़ज़ल-83

चाहत में उनकी दिल ये बड़ा बेकरार है,
यादों का सिलसिला भी इधर बेशुमार है।

हुस्ने-मतला ---
कैसा अजीब देखिये यह इंतज़ार है,
आते ही उनके आ गई दिल में बहार है।

शायद ही मिल सकें कभी राम-ओ- रहीम,
दीवार कैसी बीच ये परवरदिगार है।

चुपचाप देखते रहे बरबादियों को सब,
हर शख़्स अपने मुल्क का यूँ गुनहगार है।

बस एक ही तमन्ना है दिल में बसी हुई,
आएं वतन के काम तभी तो करार है।

झेले हैं गोलियों को जो सीने पे शान से,
सैनिक हरेक अपना बड़ा जाँनिसार है।

दो चार हर्फ़ पढ़ के नचाता है गाँव को,
अंधों में काना राजा बना होशियार है।

इस देश का ही अन्न तो खाकर बड़े हुए,
'रानी' हरेक शख़्स पे माँ का उधार है।

ग़ज़ल-84

अपने दिल को मस्ताना कर,
फिर उसको दीवाना कर।

जीवन में रस आयेगा,
कुछ हरकत बचकाना कर।

उम्र हुई फिरते फिरते,
अब तो ठौर ठिकाना कर।

भूल गए जो अपनो को,
उनको अब पहचाना कर।

अब यह बात पु'रानी' है,
कोई और बहाना कर।

ख़ुश रहना है गर तुझको,
बातें दिल की माना कर।

कब तक कोई दर्द सुने,
अब यह जख़्म पुराना कर।

दुखता दिल औरों का भी,
इन बातों को जाना कर।

ग़ज़ल-85

क्यों दर्दे दिल हम से यूं छुपा रहने दिया,
खुद से हमको किस लिए जुदा रहने दिया।

चार बातें ही सुना कर बोझ कर लेते हल्का,
क्यों दिलों के बीच शिकवा गिला रहने दिया।

सोचकर यूं रूठ जाऊ वो मनायें प्यार से,
बताओ हमें क्यों खफा रहने दिया।

दिल भूलाना चाहता है अब हर खबर,
फिर क्यों लौट आने का सिला रहने दिया।

जानते हो मोहब्बत तुम्हें की है हमने,
नाम जमाने में फिर क्यों बेवफा रहने दिया।

क्या कमी थी मोहब्बत में मेरी बता दो जरा,
क्यों लिफाफे में ही खत पडा रहने दिया।

ग़ज़ल-86

जाने कैसे लोगो से ही मेरा वास्ता रहा,
बस उलझनो से ही भरा यह रास्ता रहा।

मिल जाये मुझे भी कभी स्कूल व बस्ता,
वो मासूम आंखे ये ख्वाब पालता रहा।

जब भी की मैंने उल्फत में इकरार की बातें,
मुझको बड़े खुलूस से वो टालता रहा।

जानता था हर ख्वाब की ताबीर नहीं होती,
हसरतों को वह हमेशा मारता रहा।

हर राह में बिछाता रहा काँटे ही वह,
जाने किस जन्म का बदला निकालता रहा।

प्यार था के थी उनकी यह बेरुखी,
'रानी' हमें अपने ही सांचे में ढालता रहा।

ग़ज़ल-87

इस तरहआज महफ़िल सजा दीजिए,
गीत नीरज का कोई सुना दीजिये।

आज तक बेघरों जैसे फिरते हैं हम,
आशियाना हमारा बना दीजिए।

हार बैठे मुहब्बत की बाज़ी न हम,
जीतने का हमें हौसला दीजिए।

छा रही हैं खुमारी बहुत आजकल,
नींद से अब मुझे भी जगा दीजिए।

अंधेरो मे कब तक भटकती रहूं,
अब उजाले का कुछ आसरा दीजिए।

खातिरदारी में क्या रह गई है कमी,
मेरे मेहमान यह भी बता दीजिए।

दुनियादारी कहीं सीख जाऊं न मैं,
पाठ इंसानियत का पढा दीजिए।

तुम पे ही यकी कान्हा 'रानी' को है
मान मेरे यकीं का बढा का दीजिए।

ग़ज़ल-88

अभी तो आये अभी जाने की बात करते हो,
दिल लगाके क्यू दिल जलाने की बात करते हो।

मोहब्बत में खुद को जो हार गया सदके में,
कितने नादां हो उसे आजमाने की बात करते हो।

बह रही है पुरवाइया मचलते हुए अब,
ऐसे मे तुम संभल जाने की बात करते हो।

जल रही आग में ये दुनिया ही सारी,
लगाने वालों से ही बुझाने की बात करते हो।

जिंदगी भर सीखा जिसने ठोकर ही खाना,
ऐसे शख्स से क्यू मुस्कुराने की बात करते हो।

छुपा के रखे हैं जिन्होंने नासूर जाने कितने,
'रानी' से नये जख्म दिखाने की बात करते हो।

ग़ज़ल-89

कैकयी के वचन दो सुनाने के बाद,
गिर पड़े राजा आंसू बहाने के बाद।

राम सीता लखन तीनों वन को गए,
क्या महल में बचा उनके जाने के बाद।

मंथरा मन ही मन मुस्कुराई बहुत,
आग दशरथ के घर में लगाने के बाद।

ऐसे राघव को मेरा है शत-शत नमन,
जो चले शीश पग में झुकाने के बाद।

वन में प्रभु राम भटके थे चारो तरफ़,
हर के सीता को रावण के जाने के बाद।

कैकयी अपनी करनी पे जलती रही,
हाल जो कुछ हुआ घर जलाने के बाद।

राम का राज्य 'रानी' शुरू हो गया,
मार रावण को जंगल से आने के बाद।

ग़ज़ल-90

क्यों दर्दे दिल इस तरह हम से छुपा रहने दिया,
खुद से हमको किस लिए यूं जुदा रहने दिया।

चार बातें ही सुना कर बोझ कर लेते हल्का,
क्यों दिलों के बीच शिकवा औ गिला रहने दिया।

सोचकर यूं रूठ जाऊ वो मनायें प्यार से,
तुम बता दो क्यों हमें ऐसे खफा रहने दिया।

दिल भूलाना चाहता है अब हर खबर,
फिर भला क्यों लौट आने का सिला रहने दिया।

जानते हो कि शिद्दत से मोहब्बत तुम्हें की है,
नाम जमाने में भला क्यों बेवफा रहने दिया।

क्या कमी थी मोहब्बत में मेरी बता भी दो जरा,
क्यों लिफाफे में ही खत तुमने पडा रहने दिया।

ग़ज़ल-91

उस सभा मे सभी हिचकिचाते रहे,
तीर पांसो के शकुनी चलाते रहे।

प्रण से मजबूर अपने पितामह दिखे,
खून को बेबसी मे जलाते रहे।

द्रौपदी चीर गुरुवर बचा न सके,
सिर झुका खूब आंसू बहाते रहे।

बात मानी नहीं जो विदुर ने कहा,
ज्ञान की बात सबको सुनाते रहे।

न्याय संगत किसी को न उत्तर मिला,
धर्म के प्रश्न को सब उठाते रहे।

अनसुनी चीख अबला की सबने सुनी,
हाथ कान्हा बस अपना बढाते रहे।

नाश होगा किसी दिन कुरू वंश का,
बस यही कह युयुत्सु चिल्लाते रहे।

दंड इक दिन मिलेगा बुरे करमो का,
युद्ध होगा महा ये जताते रहे।

बात रानी समझ मुझको आई यही,
सबके कान्हा ही बस काम आते रहे।

ग़ज़ल-92

हमें राम का जो सहारा न होता,
यक़ीनन हमारा गुजारा न होता।

ये धरती ये अंबर न होते सुहाने,
अगर राम ने सब संवारा न होता।

यहां औ वहां बस भटकते ही रहते,
कभी हमको हासिल किनारा न होता।

नहीं भूमि पर विष्णु अवतार लेते,
दुखी लोगों ने गर पुकारा न होता।

नही प्राण दसरथ के जाते उसी पल,
उन्हें राम इतना जो प्यारा न होता।

सजा त्रेता युग सी मिलती अभी भी,
हरण सीते का फिर दुबारा न होता

कई जनमो तकती राहें अहिल्या,
जो चरणों से छू उसको तारा न होता।

नहीं अंत बाली का होता कभी भी,
अगर राम ने छुपके मारा न होता।

न होती जो राघव को दीनो से ममता,
विभीषण को प्रभु का सहारा न होता।

सिखाना न होती जो मर्यादा जग को,
कथा राम में यूं इशारा न होता।

कथा राम की रानी सुनता न कोई,
चरित राम का गरचे न्यारा न होता।

नाम - श्रीमती जागृति मिश्रा रानी

जन्मस्थान - नारायणपुर, छत्तीसगढ़, बचपन बेमेतरा में बीता, शिक्षा दीक्षा वहीं से प्राप्त।

निवास - रायपुर छत्तीसगढ़

शिक्षा - एम.ए.इतिहास, डी.एड.

पिता - श्री सी.पी. तिवारी, साहित्यकार, सेवानिवृत्त प्राचार्य डायट एंव साहित्यकार बेमेतरा

माता - श्रीमती चमेली तिवारी, गृहणी

पति - श्री दिलीप मिश्रा

संप्रति - शिक्षिका (ग्राम मंदिर हसौद मे पदस्थ)
वर्तमान में हिंदी एवं छत्तीसगढ़ी भाषा में कविता, गीत, गजल, सजल, कहानी, लघु कथाएँ लेखन में सक्रिय

रचनाएं - सजलकार साझा संग्रह, प्रथम पुष्पांजली साझा संग्रह

सम्मान - ऋतंभरा साहित्य आंचलिक साहित्य गौरव, मानसमणि सम्मान, गीत गुलशन सम्मान, आफताब ए गजल सम्मान, स्वर कोकिला सम्मान, समूहों मे और विभिन्न सम्मान,

मोबाइल - 9009330298

हिन्द व हिन्दी का सम्मान, है प्रमाण देशभक्ति का.. आइए करें सृजन, शब्द से शक्ति का...

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला – बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331, मो.– 9424765259, ईमेल– antrashabdshakti@gmail.com

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com

Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/

Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/

978-93-5372-259-3

मूल्य 250/–